केश काटनेसम्बन्धी आध्यात्मिक दृष्टिकोण

(केशसम्बन्धी संस्कारोंसहित)

भूमिका

पूर्वकालमें स्त्रियां स्नानसे पूर्व फनीघरके (प्रसाधन-पेटीके) समक्ष बैठकर अपने केशमें कंघी किया करती, टूटे हुए केशको चूल्हेमें डालकर जलाती एवं केशको खुला छोडकर घरसे बाहर नहीं जाती थीं । मां अथवा नानी-दादीद्वारा केशसम्बन्धी आचार-संस्कार सहजतासे बालिकाओंपर होते थे । प्रति मास बालकको भी केश कटवानेके लिए नाईके पास भेजा जाता था । स्नानोपरान्त सिरके केशमें तेल लगानेका आचार भी पिता बालक को सिखाते थे । मध्य कालमें धर्मशिक्षाके अभावमें हिन्दुओंद्वारा धार्मिक आचार एवं परम्पराका धीरे-धीरे त्याग अथवा उस सम्बन्धमें अनास्था उत्पन्न हुई । इसलिए सांस्कृतिक स्तरपर हिन्दू समाजकी हानि तो हुई ही; उसकी अपेक्षा आध्यात्मिक हानि अधिक हुई ।

मानवीय शरीरमें प्रकृतिद्वारा की गई केशकी योजना केवल सौन्दर्यवर्धन के लिए नहीं; अपितु केशके माध्यमसे ईश्वरीय चैतन्य ग्रहण करने तथा जीव की सात्त्विकता बढानेके लिए है । इस ग्रन्थमें केशके माध्यमसे ईश्वरीय चैतन्य ग्रहण कर अनिष्ट शक्तियोंके आक्रमणसे जीवकी रक्षा किस प्रकारसे होती है, इसका भी शास्त्रीय विवेचन किया गया है । स्त्रीद्वारा केश काटना, केश खुले छोडकर विचरण करना, ऐसे कृत्य अनिष्ट शक्तियोंके आक्रमणोंको एक प्रकारसे आमन्त्रण ही देते हैं । केशके सम्बन्धमें ऐसे अहितकर कृत्य टालकर उचित कृत्योंके विषयमें मार्गदर्शन इस ग्रन्थमें आपको मिलेगा ।

स्त्री एवं पुरुषके शरीरके अविभाज्य अंग 'केश'के सम्बन्धमें पाठकोंको आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्राप्त होकर उनके द्वारा इस ग्रन्थमें प्रतिपादित आचारोंका परिपालन हो, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! – **संकलनकर्ता**

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. देहके विविध भागोंपर स्थित केशका महत्त्व १४

२. केशके लाभ २१

३. पिण्डशुद्धताकी प्रक्रियामें केशके शुद्धीकरणका महत्त्व २४

४. प्राणी एवं मनुष्यों के केश २५

५. प्राणी, पुरुष एवं स्त्रियों के केश २६

६. भारतीयों एवं पश्चिमी लोगोंके केश २७

७. केश बढाना ३१

* पुरुष केश क्यों न बढाएं एवं स्त्रियां केश क्यों बढाएं ? ३१

८. केश काटना ३७

* पुरुषद्वारा केश काटनेका अध्यात्मशास्त्र ३७

* स्त्रियोंके केश काटनेसे होनेवाली हानि ४०

* नख, केश, दाढी एवं मूंछें क्यों नहीं बढने देनी चाहिए ? ५४

९. केशसे सम्बन्धित संस्कार तथा कुछ कृत्य ५७

* श्राद्धके समय क्षौरकर्म क्यों करते हैं ? ५८

* तीर्थस्थलमें जाकर मुण्डन करवानेका अध्यात्मशास्त्र ६०

* परिवारके व्यक्तिके निधनपर पुरुषोंको अपने केश पूर्णतः क्यों कटवाने चाहिए तथा स्त्रियोंको केश क्यों नहीं कटवाने चाहिए ? ६२